Peer Reviewed and Refereed Journal ISSN (Online) 2583-181X

International Journal of Humanities, Social Science, Business Management & Commerce (IJHSSBMC)

A Quarterly International Research Journal of Humanities, Social Science, Business Management & Commerce

SRJIF Impact Factor (2024): 8.5

Volume 8, Issue 3 (September 2024)

Editor-in-Chief
Dhananjay Channale

Guest Editors
Prof. Maruf Mujawar
Prof. Dr. Arun Shinde

Infinity Academic & Research Association, Chatrapati Sambhajinagar (MS) INDIA

25	**Orientalism and Historiography** - Dr. Mahadev L. Sontakke	122 – 126
26	**An Analytical Study of Resilience and Mental Health of College Students** - Dr. Arun C. Shinde and Dr. Amol Kamble	127 – 134
27	**कोल्हापूर जिल्ह्यातील आक्रमकता व फिअर ऑफ मिसिंग आऊट (FOMO) यांचा शेअर्स मार्केट करणाऱ्या व्यक्तीच्या मानसिक आरोग्यावर होणारा परिणाम** - प्रा. पर्वत प्रदीप कांबळे	135 – 142
28	**Women and Education** - Ms. Ranjita Ramesh Kalebere and Dr. Sopan Govind Khade	143 – 148
29	**A Study on Land Degradation in India** - Dr. Santosh Ishwara Barale	149 – 153
30	**Need of Sustainable Agriculture Development in India** - Dr. Shivanand A. Bhandare	154 – 156
31	**Impact of Social Networking Sites on The Users: A Socio-Psychological Analysis** - Dr Vijay K. Gheji and Ms. Priti B. Desai (Gheji)	157 – 160
32	**Socio-Economic and Educational Problems in the Youth of Bhoi Community in Karad City** - Mr. Amol T. Gavade, and Dr. Sandip S. Mane	161 – 165
33	**भारतातील स्त्रीयांच्या समस्या** - प्रा. अमृत दत्तात्रय मुधाळे	166 – 169
34	**Applicability of Swami Vivekananda's Thoughts in Contemporary Indian Society** - Vaibhav Kotekar	170 – 173
35	**समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में जनचेतना के परिप्रेक्ष्य में नारी विषमता का चित्रण** - प्रा. मारूफ मुजावर	174 – 177
36	**'बाल साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक सदभाव' (क्षमा शर्मा के बाल साहित्य के संदर्भ में)** - डॉ. छाया शंकर माळी	178 – 182
37	**Recent Issues and Challenges of Indian Society and Role of Humanities** - Dr. Ramchandra Baburao Vhanbatte, and Mr. Narayan Janardhan Relekar	183 – 188

Open Access

International Journal of Humanities, Social Science, Business Management & Commerce

(An International Peer-reviewed & Refereed Scholarly Open Access Journal)

ISSN (Online): 2583-181X

Journal homepage: https://ijhssbc.iar-a.com/

Vol. 08, Issue 03, September 2024; Pages 174 – 177

DOI: 10.5281/zenodo.14545774

SRJIF Impact Factor (2024): 8.2

IJHSSBMC

ISSN (online) : 2583-181X

Original Research Article

समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में जनचेतना के परिप्रेक्ष्य में नारी विषमता का चित्रण

प्रा. मारूफ मुजावर

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, चंद्राबाई-शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी जिला : कोल्हापुर ४१६२०३ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: marufmujawar65@gmail.com

Received: 23 July, 2024 | Accepted: 06 September, 2024 | Published: 07 September, 2024

स्वतंत्रता पूर्व महानगरीय स्त्रियों का जीवन और 21 वीं शताब्दी के स्त्रियों का महानगरीय जीवन इसमें जमीन – आसमान का अंतर है। क्योंकि स्वतंत्रता पूर्व स्त्रियॉं घर से बाहर नहीं निकलती थी। वह चूल्हा, चौका और बच्चों को संभालना इतना ही कर सकती थी। लेकिन जैसे-जैसे आधुनिक युग आता गया वैसे-वैसे स्त्रियॉं उच्च शिक्षा लेने लगी और अपने पैरों पर खडे होने लगी है। पुरूषों के साथ नौकरी करने हेतु घर से बाहर निकल पडी है। लेकिन उन्हें पुरूषप्रधान संस्कृति में अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है।

आज के दौर में स्त्रियों के साथ कौनसे अन्याय नहीं हो रहे हैं? आए दिन होनेवाले बलात्कार, छेडछाड, दहेज से जुडे उत्पीडन, भृणहत्या, सास का दबाव, पति की मार आदि। यह सभी एक खुदगर्ज, लालची, आपराधिक समाज का प्रतिबिम्ब छोडते है। छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार, उनकी हत्याएं, दिल दहेला देनी वाली घटनाएँ है। बडे शहरों में हम अपनी बच्चियों और परिवार की युवा लडकियों को लेकर असुरक्षा के बोझ से ग्रस्त रहते हैं। मनुष्य की पाशविक वृत्ति को नियंत्रित करने में समाज और व्यवस्था पूरी तरह से असफल रही है। लोगों को लगता है कुछ भी लेकर लेनेपर बच सकते हैं। मौका मिलते ही मनमानी करने लगता है। आत्मानुशासन और आत्मसंयम किसी की प्राथमिकता नहीं रह गई है।

भारतीय इतिहास में महिला साहित्य की एक अनुपम उपलब्धि है। देश विदेश में चल रहे नारी शोषन को ध्यान में रखते हुए लेखिकाओंने अपनी रचनाओं में नारी चिंतन के विभिन्न स्तरों का सजीव चित्रण किया है। लेखिकाओंने नारी, पुरूष संबंधो के नए मूल्यांकन, सामाजिक जीवन में नारी महत्व, अधिकार एवं परिवार, विवाह, दाम्पत्य जीवन और उनसे जुडी समस्याओं का अपने दृष्टिकोन में प्रस्तुत किया है।

1990 के बाद लेखिकाओंने नारी समस्या को ध्यान में रखकर समाज को ही कठघरे में लाकर खडा कर दिया है। उसमें ममत कालिया, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, सूर्यबाला, राजी सेठ, कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, मैत्रेयी पुष्पा, शशिप्रभा शास्त्री, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, दीप्ति खंडेलवाल आदि लेखिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने अपने साहित्य में महानगरीय प्रणाली में चल रहे पारिवारिक

जनजीवन, नारी शिक्षा और उदासिनता, शिक्षित नारी के सामने आनेवाली समस्या, संस्कृति का विनाश, परम्परा और आधुनिकता के बीच उसी नारी आदि स्थितियों पर दृष्टिक्षेप डाला है।

महानगरीय पारिवारिक जीवन

भारतीय इतिहास में महिला लेखन साहित्य की एक अनुपम उपलब्धि है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी चिंतन के विभिन्न स्तरों का सजीव चित्रण किया है। उसी में पारिवारिक जीवन को भी लिखा है। जैसे - ममता कालिया जैसी महान लेखिकाने अपने 'दौड' उपन्यास में महानगरीय जीवन प्रणाली में पारिवारिक बिघडाव का प्रकटीकरण किया है। वे कहती है, बच्चे अपने पढाई के लिए माता - पिता का सहारा लेते हैं। लेकिन जब पढाई खत्म हो जाती है और अपने पैरों पर खडे रहते हैं, तो माता-पिता को भूलने लगते हैं। जैसे कि उपन्यास का पात्र पवन एम.बी.ए. की पढाई पूरी कर नौकरी हेतु माता- पिता से 1800 कि.मी. की दूरी पर रहता है। उसी तरह सघन भी दिल्ली में सॉफ्टवेअर का कोर्स पूरा कर विदेश चला जाता है। माता-पिता बूढापे का सहारा समझकर किसी एक को पास रहने को कहते हैं। लेकिन पैसें के पीछे भागनेवाली पीढी पीछे मूडकर देखती नहीं है।

चित्रा मुदगल ने अपने 'गिलिगडु'- उपन्यास में महानगरीय पारिवारिक जीवन का चित्रण किया है। जैसे - जसवंत सिंह का बेटा नरेंद्र और बेटी शालिनी संपत्ति हडप करके उन्हें वृद्धाश्रम में डालने का षडयंत्र रचते हैं। बेटा नरेंद्र अधिक धन कमाने हेतु विदेश जाना चाहता है। किंतु पिताजी को अपने साथ ले जाने को तैयार नही है। बेटी शालिनी भी पिता को साथ रखना पसंद नहीं करती है। किंतु पिता की उपेक्षा कर धन हडपना चाहते हैं। उसी तरह कर्नल के बेटे भी फ्लैट बेचकर रूपये चाहते हैं। बेटा श्रीनारायण पैसों के लिए पीटता है और उसी में उनकी मृत्यू हो जाती है। लेखिका कहना चाहती है कि, बच्चों के लिए आज रूपये प्यारे हैं। परिवार, घर या माता-पिता नहीं। इस संबंध में रजनी गुप्ता ने लिखा है, "संस्कृति और बाजारवाद से उपजी सामाजिक विसंगतियों और विडम्बनाओं के बीच सास लेती नई पुरानी पीढी के अन्तर्संबंधो और अन्तःसंघर्षो के विस्तृत यथार्थ को पूरी अर्थवत्ता और अहरे सन्दर्भो तक सार्थ अभिव्यक्ति हो गयी है।"

नारी शिक्षा और उदासिनता

शिक्षा ज्ञान की गंगोत्री है। इस शिक्षा रूपी गंगोत्री ने नारी की उन्नति में सहायता की है। जीवन में सुधार लाने में सफल हुई है। शिक्षा ने नारी को समस्त अंधविश्वासों से मुक्त कर तार्किक दृष्टिकोण प्रदान किया है। लेकिन शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है। नासिरा शर्मा ने 'दहलीज' कहानी में बेटी से ज्यादा बेटे को महत्व देने की मानसिकता और उससे होनेवाले परिणाम को उजागर किया है। कहानी सकीना, हुमैरा और शाहीन तीन बहनें हैं। जावेद उनका भाई है। तीनों बहने शिक्षा समाप्त कर आगे पढना चाहती है। लेकिन अर्थ तथा दादी के कारण वे आगे पढ नहीं सकती है। दादी कहती है कि, "और बन्नों बंद मुट्ठी लाख की, खुली तो राख की। चुपचाप घर में बैठकर माँ का सिलाई में हाथ बटाओं। वरना आरिफ मियाँ की इज्जत पर राह चलते ढेले फेकेंगे।" सकीना के ससुरवाले उसकी पढाई पर नाराज होते हैं तब वह घुटन से मर जाती है। शाहीन भी शादी की रात आत्महत्या कर लेती है।

नारी शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानंद ने कहा था – "शिक्षित और सुसंस्कृत स्त्री शक्ति से देश का भाग्य बदला जा सकता है। देश के विकास और प्रगति का मानंदड उस देश की शिक्षित स्त्रियाँ ही होती है। शिक्षित स्त्री और सामाजिक विकास को पर्याय माना गया है। कहा जाता कि, पुरूष को शिक्षित मात्र व्यक्ति को शिक्षित करना है और स्त्री को शिक्षित करना याने पूरे परिवार और समाज को शिक्षित करना है। संविधान में स्त्री पुरूष दोनों के लिए समान शिक्षा के अधिकार प्रावधान है। किंतु देश में पुरूष प्रधान संस्कृति इस बात को मानती नही है और नारियों को शिक्षा से दूर रखते हैं।"

शिक्षित नारी के सामने आनेवाली समस्या

स्वतंत्रता के पूर्व भारत में नारी चूल्हा, चौका और बच्चों को संभालना इतना ही कर सकती थी। लेकिन स्वतंत्रता के बाद तथा 20 वी शताब्दी में नारियों ने उच्च शिक्षा लेना सिखा और आगे बढना चाहा है। किंतु पुरूष प्रधान संस्कृति आज भी शिक्षित नारियों पर अधिकार जमाते हैं। नारियाँ आर्थिक स्थिती मे सुधार लाने के लिए नौकरी करती है। पर दफ्तर तथा परिवार में उसकी उपेक्षा होती है। जैसे दीप्ति खंडेलवाल के 'नारी तुम' कहानीसंग्रह के 'तपिश के बाद- कहानी में पत्नी सुमी पढी लिखी है, बैंक में काम करती है। फिर भी पति आनंद

उसकी मद्द नही करते है। उलटे डॉटते है, "क्या समझने लगी है अपने आप को? बहुत अभिमान हो गया है। यह मत भूलो कि, मै पल भर में तुम्ह ठुकरा सकता हूँ।"

औरतों को बार-बार पति परमेश्वर का शिकार होना पडता है। जैसे - दीप्ति खंडेलवाल के 'कडवे सच- कहानीसंग्रह के -एक पारो पुरवैया' में सुधा ने एम.ए. किया है और वह प्राध्यापिका बनी थी। पर पति के तबादले के कारण उसे नौकरी छोडनी पडी। मानसिक अशान्ति के कारण सुधा कहती है कि, "पुरवैया नहीं पारो दीदी मेरा कोई देवदास नहीं बन पाया। लेकिन मैं पारो बन के रह गई हूँ।" ममता कालिया के 'दौड' उपन्यास की नारी पात्र स्टैला भी उच्च शिक्षा लेकर नौकरी में आगे बढना चाहती है। इसीलिए उसे अपने पति से दूर रहना पडता है। सास की दृष्टि से वह बहु बनने के लायक नहीं थी। क्योंकि आधुनिक वस्त्रों को अपनाती थी। इसीलिए पवन और स्टैला को मॉ द्वारा शादी की अनुमती नहीं मिलती है।

21 वी सदी की सबसे बडी समस्या है, व्यवसायलक्षी महिला के साथ यौनिक छेडछाड। जैसे - नौकरी दिलवाने हेतु गंदे एस.एम.एस.भेजकर, कम्प्युटर पर गंदी तस्वीरें दिखाकर आदि। इसके बावजूद भी श्रमजीवी, बुद्धिजीवी जो असंगठित क्षेत्र में काम करती है उन्हें आज भी असुरक्षित रहकर आसपास के पुरूषों की ज्यादतियाँ सहनी पडती है।

महानगरीय जीवन में संस्कृति का विनाश

चित्रा मुद्गल जीने अपने 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में संस्कृति का विनाश आज के विज्ञापन शो में टू पीस बिकनी में ज्वलित सौंदर्य का प्रदर्शन कर उपभोग की चीज बनी है। इसी पर लेखिका कहती है, उन्होंने एक अपेक्षाकृत नए क्षेत्र विज्ञापन की दुनिया का मारक झूठ और सच, दुर्वह, आकर्षण और जगमगाती सफेदी के भीतर छिपे ईर्ष्या, मद-मत्सर की चिडचिडाहट से हमें परिचित कराया है और बोल्डनेस के साथ अपनी इच्छा के विरूद्ध पुरूषों की दुनिया में एक बिकाऊ चीज बनती स्त्री की नियति पर उंगली रखी है।" वास्तविकता यह है की आज के विज्ञापनों में स्त्री देह का नग्न चित्रण अधिक होता है और उत्पादों की विशेषताओं की चर्चा कम। जैसे नीता के लिए अर्थ तथा प्रतिष्ठा ही सब कुछ है, तो अंकिता के लिए संस्कार तथा मूल्य। क्योंकि वह संस्कृति का ख्याल करती है, पर नीता संस्कृति को बिगाड रही है। नीता अंकिता को समझाते हुए कहती है, 'यह ग्लैमर की दुनिया है अंकू! यहॉ जीने की जी पाने की पहली शर्त है - विशिष्ट दिखना, विशिष्ट करना, विशिष्ट होना, विशिष्ट बनना जो वास्तविक नहीं है।' नीता पैसों के लिए संस्कृति भूल रही है और वह विज्ञापनों में कम कपडों में अंग प्रदर्शन करती है और कईयो के साथ दैहिक संबंध रखती है। वह यह भी कहती है "स्त्री को स्त्रीत्व से मुक्ति नहीं चाहिए उन रूढियों से मुक्ति चाहिए जिन्होंने उसे वस्तु बना रखा है।"

'दौड' उपन्यास में ममता कालिया ने बताया है कि, महानगरीय प्रणाली में रहकर बच्चे संस्कृति को किस तरह से भूला रहे हैं। पवन माता पिता का आदर करना भूल जाता है। अपनी मनपसंद लडकी स्टैला के साथ शादी कर लेता है। इसमें वह माता पिता की राय नहीं लेता है। सघन भी देश में पढाई करके विदेश चला जाता है। वहाँ की संस्कृति को अपना लेता है। स्टैला भी आधुनिक प्रणाली को अपनाती है। वह अपने सास-ससूर के सामने खुलेआम घुमती है। आधुनिक प्रणाली के वस्त्रों को अपनाती है। आदर प्रणाली को भूल जाती है। इसमे पता चलता है कि, माता-पिता भी विवाह में संस्कृति का जतन क्यों करना चाहते है, पर ऐसा होता नहीं है।

परंपरा और आधुनिकता के बीच फंसी नारी

शताब्दियो का इतिहास गवाह है कि, पुरूष सत्ताक समाज तथा सामंतवादी लोगों ने नारी को परंपरा के कैद खाने में जखड दिया। वह आधुनिकता के दौर में घूमना चाहती है, किंतु उस पर पाबंदियों लगाई गई है। आँखो पर परंपरा की पट्टीया बांध दी है। पॉवों में रीतिरिवाज के घुंघरू पहना दिए है। नाक में धर्म की नकेल डाल दी है और सदियों से कोलू के बैल की तरह इशारों पर नाचती है। केवल भारत में यह नही है बल्कि दुनिया भर में नारी शोषण है। 'सीमान्तनी उपदेश- यह पंजाबी महिलाद्वारा लिखी किताब है। उसमें बाप तीन शादियाँ करता है और अपनी सात साल की लडकी का विवाह अमीर लडके से करता है। दो महिने में लडका मर जाता है। बाप को पता चलने पर वह उसे जहर पीने को कहता है, तब वह कहती है कल पीऊंगी। सुबह हर सहेली से रोते हुए कहती है -

"हो चुका आज जो कि था होना
कल बसावेंगे कब्र का कोना
देख लो आज हम को जी भर के

कोई आता नही फिर मरके।''

इस तरह से हम देखते हैं कि, औद्योगिकीकरण, नागरीकरण और अर्थोपार्जन की विसंगतियों के कारण पारंपारिक संयुक्त परिवार टूटते हैं। आज ग्रामीण, नगरीय एंव महानगरीय व्यक्ति आत्मिक स्तर पर कुंठाग्रस्त अगलाव की भावना से त्रस्त है। व्यक्ति उन्नति करना चाहता है पर उसे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडता है। ऐसी स्थिती में नारी भी अपने आप को साबित करने में असमर्थता पा रही है। क्योंकि वह आज भी पुरूषों की तरह विभिन्न समस्याओं का सामना कर रही है।

सन्दर्भ सूचि

1. रजनी गुप्ता - कथाक्रम - अप्रैल - जून, 2007 पृ.सं.-118
2. नासिरा शर्मा - खुदा वापसी - पृ.सं.- 64
3. दीप्ति खंडेलवाल - नारी तुम - पृ.सं.- 166
4. दीप्ति खंडेलवाल - कडवे सच - पृ.सं.- 51
5. चित्रा मृद्गल - एक जमीन अपनी - पृ.सं.- 88
6. चित्रा मृद्गल - एक जमीन अपनी - पृ.सं.- 241
7. अंतरंग संगिनी - जुलाई - सितम्बर 2011 - पृ.सं.- 24 एवं 25
8. ममता कालिया - दौड (उपन्यास)
9. चित्रा मृद्गल - गिलिगण्डु (उपन्यास)